

# तरबूज की खेती कर किसान कमा सकते हैं अधिक लाभ: डॉ. आई. एन. शुला

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉटर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में गुरुवार को कल्याणपुर स्थित सेजी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आई. एन. शुला ने किसानों के लिए तरबूज उगाकर अधिक लाभ कमाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कहूँ वर्गीय फसल है। कहा कि क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में 15.18 हजार हेटेर क्षेत्रफल है। जो देश में प्रथम स्थान पर है।

डॉटर शुला ने बताया कि पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज से 30 कैलोरी ऊर्जा, 92 प्रतिशत पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। पानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से लू या गर्मी से बचा जा सकता है।

डा. शुला ने बताया कि इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह शरीर में डिहाइड्रेशन को रोकता है। इसकी बुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। जिसे किसान भाई 20 मार्च तक

वही कर सकते हैं। उन्होंने तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक अरकाज्योति प्रमुख हैं। तरबूज का बीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेटेर बुआई करना चाहिए। बुवाई के पूर्व बीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें। इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई यदि सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो कुंतल प्रति हेटेर उत्पादन प्राप्त होता है।





दृष्टि के लिए सोर्ग के... पैल 02

सुक्रवार, 04 मार्च, 2022

हिंदी दैनिक

# यूपी मैसेजर

जनता की आवाज

लखनऊ से प्रकाशित

वर्ष : 08,

## तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कहू वर्गीय फसल : डॉ शुक्ला

यूपी मैसेजर संवाददाता

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने किसानों हेतु तरबूज उजागर कमाए अधिक लाभ नामक एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कहू वर्गीय फसल है।

डॉक्टर शुक्ला ने कहा कि क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में 15.18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है। जो देश में प्रथम स्थान पर है। उन्होंने बताया की पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज से 30 कैलोरी ऊर्जा, 92 ली पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। पानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से



लू या गर्मी से बचा जा सकता है। उन्होंने बताया कि इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह शरीर में डिहाइड्रेशन को रोकता है। डॉ शुक्ला ने बताया कि इसकी बुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। जिसे किसान भाई 20 मार्च तक वही कर सकते हैं। उन्होंने तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक

अरकाज्योति प्रमुख हैं। तरबूज का बीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बुआई करना चाहिए। बुवाई के पूर्व बीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें।

इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई यदि सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

# તરબૂજ સે કિસાન કમાએ અધિક લાભ

વરિષ્ઠ વૈજ્ઞાનિક ડૉ. આઈએન શુક્લા ને કિસાનોં કે લિએ જારી કી એડવાઇઝરી જારી



કાનપુર। ચંદ્રશેખર આજાદ કૃષિ એવી પ્રૌદ્યોગિકી વિશ્વવિદ્યાલય કાનપુર કે કુલપતિ ડૉ. ડી આર સિંહ કે નિર્દેશ કે ક્રમ મંદ ગુરુવાર કો કલ્યાણપર સ્થિત સંબ્જી અનુભાગ કે વરિષ્ઠ વૈજ્ઞાનિક ડૉ. આઈએન શુક્લા ને કિસાનોં કે લિએ તરબૂજ કી ખેતી સે સંબંધિત એડવાઇઝરી જારી કી હૈ।

ઉન્હોને બતાયા કી તરબૂજ ગર્મી કે મૌસમ મેં ડુગાઈ જાને વાળી પ્રમુખ કદુદુ વર્ગીય ફસલ હૈ। ક્ષેત્રફલ કી દૃષ્ટિ સે ઉત્તર પ્રદેશ મેં 15.18 હજાર હેક્ટેયર ક્ષેત્રફલ હૈ। જો દેશ મેં પ્રથમ સ્થાન પર હૈ। ઉન્હોને બતાયા કી પોષક તત્ત્વોં કી દૃષ્ટિ સે 100 ગ્રામ પકે તરબૂજ સે 30 કેલોરી ઊર્જા, 92 પ્રતિશત પાની, 8 ગ્રામ કાર્બોહાઇડ્રેટ, 0.6 ગ્રામ પ્રોટીન, 0.2 ગ્રામ વસા તથા 112 મિલીગ્રામ પોટાશ પાયા જાતા હૈ। પાની કી અધિક માત્રા હોને સે ઇસકે સેવન સે લુયા ગર્મી સે બચા જા સકતા હૈ। ઉન્હોને બતાયા કી ઇસમેં લાઇકોપિન, સિટ્રોલીન, વિટામિન એ એવી વિટામિન સી પર્યાપ્ત માત્રા મેં પાયા જાતા હૈ। યાં શરીર મેં ડિહાઇન્ડ્રેશન કો રોકતા હૈ। ડૉ. શુક્લા ને બતાયા કી ઇસકી બુબાઈ કે લિએ 20 સે 30 ડિગ્રી સેલ્સિયસ તાપમાન અનુકૂલ રહતા હૈ। કિસાન 20 માર્ચ તક તરબૂજ કૌબુચાઈ કર સકતે હૈને। ઉન્હોને



તરબૂજ કી ઉન્નતશીલ પ્રજાતિઓ કે બારે મેં બતાયા કી દુગાંપુરા મીઠા, શુગર બેબી, દુગાંપુર કેસર ઔર અંકોમાનિક અરકાજ્યોતિ પ્રમુખ હૈને। તરબૂજ કા બીજ 3.5 સે 4 કિલોગ્રામ પ્રતિ હેક્ટેયર બુઆઈ કરના ચાહિએ। બુબાઈ કે પૂર્વ બીજોં કો અચ્છી પ્રકાર સે શોધિત કર લેં। ઇસમેં 100 કિલોગ્રામ નાઇટ્રોજન, 60 કિલોગ્રામ ફાસ્ફોરસ એવી 60 કિલોગ્રામ પોટાશ કી આવશ્યકતા હોતી હૈ। ઉન્હોને બતાયા કી કિસાન યદિ સહી પ્રબંધન કર તરબૂજ કી ખેતી કરતે હોય તો 300 સે 350 કિલો પ્રતિ હેક્ટેયર ઉત્પાદન પ્રાપ્ત હોતા હૈ।



देश-विदेश

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

उत्तर प्रदेश

न: उत्तरी कीव के 3 रिहायशी इलाकों में... 12

एनवाई सिनेमाज ने मेरठ में की एक अम्बुज सिनेमा... 10



लालबाज़ू

वर्ष: 13 | अंक: 141

लूप्ति: ₹3.00/-

पृष्ठ: 12

लालबाज़ू | गुजरात | 04 मार्च, 2022

# जन एक्सप्रेस

@janexpressnews

janexpresslive

janexpresslive

www.janexpresslive.com/epaper

## तरबूज की खेती कर किसान कमा सकते हैं अधिक लाभ: डॉ. आई. एन. शुक्ला

जन एक्सप्रेस | काश्यपुर जलाल

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉटर डीआर सिंह के निदेश के तहम में गुरुलाल को काल्याणपुर स्थित सेवी अनुभाव के बाइछ वैज्ञानिक डॉ. आई. एन. शुक्ला ने किसानों के लिए तरबूज उत्पादन अधिक लाभ कमाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उत्तरी जाने वाली प्रमुख कहू वर्गीय प्रजाति है। कहा कि क्षेत्रफल की दृष्टि से देश प्रदेश में 15.18 हजार हेटेयर क्षेत्रफल है। जो देश में प्रधम स्थान पर है।

डॉटर शुक्ला ने बताया कि पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज से 30 कैलोरी कार्ब्स, 92 प्रतिशत पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। जानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से लू या गर्मी से बचा जा सकता है।

डॉ. शुक्ला ने बताया कि इसमें लाइकोपिन, फिल्टीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी एवं भी मात्रा में पाया जाता है। यह शरीर में विलायकेन को रोकता है। इसकी बुराई के लिए 20 से 30 छिंदी मेहिस्यस तापमान अनुकूल सहा है। जिसे किसान भाई 20 मार्च तक

खीं कर सकते हैं। उन्होंने तरबूज की उत्तरशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा गीदा, शुकर बेडी, दुर्गापुरा केसर और अकर्मानिक अस्कलज्योति प्रमुख हैं। तरबूज का व्यीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेटेयर बुराई करना चाहिए। बुराई के पूर्व व्यीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें। इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फाल्कोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि किसान भाई यदि सही प्रबन्धन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो कुंतल प्रति हेटेयर उत्पादन प्राप्त होता है।



# जननत टुडे

वर्ष: 13

अंक: 40

देहरादून, गुजरात, 03 मार्च, 2022

पृष्ठ: 08

## तरबूज की पैदावारी कर कर्माए अधिक मुनाफ़ा: डॉ शुक्ला

दीपक गौड़ (जननत टुडे)



**कानपुर:** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ आई एन शुक्ला ने किसानों हेतु तरबूज उजागर कर्माए अधिक लाभ नामक एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि तरबूज गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कहू वर्गीय फसल है डॉक्टर शुक्ला ने कहा कि क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में 15.18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल है जो देश में प्रथम स्थान पर है। उन्होंने बताया कि पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज

से 30 कैलोरी ऊर्जा, 92% पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम वसा तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है पानी की अधिक मात्रा होने से इसके सेवन से लू या गर्मी से बचा जा सकता है उन्होंने बताया कि इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है यह शरीर में डिहाइड्रेशन को रोकता है डॉ शुक्ला ने बताया कि इसकी बुवाई

के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है जिसे किसान भाई 20 मार्च तक वही कर सकते हैं उन्होंने तरबूज की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में बताया कि दुर्गापुरा मीठा, शुगर बेबी, दुर्गापुरा केसर और अर्कामानिक अरकाज्योति प्रमुख हैं तरबूज का बीज 3.5 से 4 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बुआई करना चाहिए बुवाई के पूर्व बीजों को अच्छी प्रकार से शोधित कर लें इसमें 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फारफोरस एवं 60 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है उन्होंने बताया कि किसान भाई यदि सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 किलो कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादन प्राप्त होता है।

# राष्ट्रीय

# खबार



कानपुर • शुक्रवार • 4 मार्च • 2022

## किसान तरबूज उगाकर कमाएं अधिक लाभ



तरबूज की खेती की जाती है। उन्ना के मुताबिक कि साठा तरबूज की वुवाई सीएसए के सद्गी वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला।

तरबूज की वुवाई 20 मार्च तक कर सकते हैं। इसकी वुवाई के लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल रहता है। उन्होंने कहा कि तरबूज

सीएसए के सब्जी वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला की सलाह

की उन्नतशील प्रजातियों में दुर्गपुरा मीठा, शुगर वेबी, दुर्गपुरा केसर और अकर्मानिक व अरकाज्योति प्रमुख हैं। तरबूज के बीज का 3.5 से 4 किग्रा प्रति हेक्टेयर बुवाई करना चाहिए।

बुवाई के पूर्व बीजों को शोधित करना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि किसान सही प्रबंधन कर तरबूज की खेती करते हैं तो 300 से 350 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्राप्त हो सकता है।

गर्मी में स्वास्थ्य के लिए बेहतर है तरबूज का सेवन : गर्मी के मौसम में तरबूज का सेवन स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद है। इसमें पानी की मात्रा अधिक होने के कारण गर्मियों में इसके सेवन से लूगर्मी से बचा जा सकता है। पोषक तत्वों की दृष्टि से 100 ग्राम पके तरबूज में 30 कैलोरी ऊर्जा, 92 प्रतिशत पानी, 8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.6 ग्राम प्रोटीन, 0.2 ग्राम क्षया तथा 112 मिलीग्राम पोटाश पाया जाता है। इसमें लाइकोपिन, सिट्रलीन, विटामिन ए एवं विटामिन सी भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

कानपुर (एसएनबी)। किसान तरबूज उगाकर अन्य फसलों की अपेक्षा कहीं अधिक कमाई कर सकते हैं। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कल्याणपुर स्थित सब्जी अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आईएन शुक्ला ने तरबूज की खेती को लेकर किसानों के लिए सलाह जारी की है।

डॉ. शुक्ला के अनुसार गर्मी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख कदम वर्गीय फसल तरबूज के उत्पादन में उप्रदेश में प्रथम स्थान पर है। यहाँ 15.18 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में